

□□□□ □□□□

जनसत्ता 4 जून, 2014 : आदरणीय सोनियाजी, लोकसभा चुनाव में आपकी पार्टी कांग्रेस की करारी हार

के बाद आप आत्ममंथन के मूड में होंगी। आपकी अगुआई में कांग्रेस की यह अब तक की सबसे बड़ी हार है। पार्टी के इतने कम सांसद चुनकर लोकसभा में पहुंचे हैं कि इस बात पर बहस हो रही है कि कांग्रेस संसदीय दल के नेता को वपिक्ख के नेता का दर्जा मलिंगा या नहीं। संविधान और सदन की कार्यवाही के विशेषज्ञ इस बात पर अलग-अलग राय रखते हैं। खैर, यह अलहदा विषय है। हम कांग्रेस की ऐतिहासिक हार की बात कर रहे थे। जिस दिन लोकसभा चुनाव के नतीजे आते थे तो आप अपने सुपुत्र राहुल गांधी के साथ मीडिया के सामने आई थीं और आपने पार्टी अध्यक्ष होने के नाते हार की ज़िम्मेदारी स्वीकार की थी। हार की ज़िम्मेदारी आपके सुपुत्र राहुल गांधी ने भी अपने सर पर ली थी। सोनिया जी, इस तरह ज़िम्मेदारी लेने से क्या पार्टी की हालत बेहतर हो पाएगी। सोचिएगा।

कांग्रेस की इतनी बुरी गत तो इमरजेंसी के बाद हुई। चुनाव या फिर नरसिंह राव सरकार के कार्यकाल के बाद हुई। चुनाव में भी नहीं हुई थी। इतना अवश्य है कि जब सीताराम केसरी पार्टी के अध्यक्ष बने थे तो लगने लगा था कि कांग्रेस के पतन की शुरुआत हो गई है। हर दिन पार्टी का कोई न कोई नेता कांग्रेस छोड़ कर जा रहा था। उसके पहले नारायण दत्त तिवारी और अर्जुन सिंह ने कांग्रेस तोड़ कर नई पार्टी- कांग्रेस (तिवारी)- बना ली थी। आपने मई 1995 में तिवारी और अर्जुन सिंह के धरती वाली कांग्रेस की कमान संभालने से मना कर दिया था। केलकत्ता अधिवेशन के दौरान सत्तानवे में आपने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ली थी। उन्नीस सौ अठानवे के लोकसभा चुनाव के दौरान आपने कांग्रेस के लॉकर प्रचार किया और पार्टी के कठिन दौर से नकिलने का बीड़ा उठाया। आपने सक्रिय राजनीति में भागीदारी को लेकर अपने विचार बदले और राजनीति में सक्रिय हो गईं।

जब आपने कांग्रेस की कमान संभाली तो सीताराम केसरी और संयुक्त मोर्चे की सरकार के वक्ता कांग्रेस की इतनी करिबरी हो चुकी थी कि उसे ठीक करने में आपके कई साल लगे थे। पार्टी की अगुआई स्वीकार करने के बाद आइसीसी की बैठक में आपने पहला भाषण दिया तो लगा कि पार्टी के आप पटरी पर ला सकती हैं। आपके याद होगा कि अप्रैल उन्नीस सौ अठानवे में अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन के अपने भाषण में आपने कहा था कि पार्टी में चापलूसों और चमचों की कोई जगह नहीं होगी और हम सरिफ और सरिफ वही करेंगे जो हम महसूस करते हैं।

आपके नेतृत्व में कांग्रेस ने कई ऐसे कदम उठाए जिन्होंने पार्टी के प्रति लोगों के नजरों को बदलने में मदद की। उन्नीस सौ अठानवे में पार्टी के कठिन अधिवेशन में आपने पार्टी-पदों के लॉकर तैतीस फीसद पद महिलाओं के लॉकर आरक्षण करने का लान किया। इसके अलावा कम से कम बीस फीसद पद पछिणी जाति, अनुसूचित जाति और जनजाति के नेताओं को देने का भी फैसला किया था। आपके नेतृत्व संभालने के नौ महीनों में ही कांग्रेस के मध्य प्रदेश, दिल्ली और राजस्थान के विधानसभा चुनावों में जीत हासिल हुई थी। कवकत तो ऐसा था कि देश के पंद्रह सूबों में कांग्रेस की सरकार थी। शरद पवार ने आपके विदेशी मूल के मुद्दे पर आपको घेरने की केशशि की थी लेकिन आपकी राजनीति ऐसी रही कि वही पवार 2004 में आपके नेतृत्व को स्वीकार करते नजर आए। शमिला में जुलाई 2003 में आपने जो रणनीति बनाई वह सफल रही।

पार्टी में आपके प्रति समर्पित वरिष्ठ नेताओं ने तब दूसरे दलों के सहयोगियों के साथ रखने में बेहद अहम भूमिका अदा की थी। आपके नेतृत्व में 2004 में कांग्रेस के भारतीय जनता पार्टी से ज्यादा सीटें मिली थीं और उसने अपने सहयोगियों के साथ सरकार बनाई थी। आपने प्रधानमंत्री का पद तुम्हारे भारतीय राजनीति में बहुत ऊंची जगह हासिल कर ली थी। वरिष्ठियों ने तब इस बात का जोरदार प्रचार किया था कि उस वक्त के राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने आपके सरकार बनाने से रोक था। बाद में जब कलाम की क्ताब बाजार में आई तो ये सारे आरोप भी नरिधार साबित हो गए।

आपने मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्री पद पर मनोनीत करके दूसरी बड़ी मसाल पेश की थी। इन सबका नतीजा यह रहा कि 2009 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के पराजय का स्वाद चखना पड़ा था। यह आपके नेतृत्व का वह शखिर था जहां से कांग्रेस के पतन का रास्ता नक्का।

सन 2009 के लोकसभा चुनाव में पार्टी की जीत का सेहरा आपके पुत्र राहुल गांधी के सर पर बांधा गया और आप खामोशी से उसके देखती रहीं। जनता और आपकी पार्टी के नेताओं के बीच यह संदेश गया कि राहुल गांधी के दाँ जाने वाले श्रेय के आपकी मौन स्वीकृति है।

जसि जीत का सेहरा आपके मनमोहन सिंह के अलावा पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेताओं के सरि बांधना चाहता था उसे आपने चापलूसों के राहुल के सरि बांधने की छूट दे दी। उन्नीस सौ अठानवे में अपने पहले भाषण में पार्टी के चापलूसों से मुक्त करने की नसीहत आप खुद भूल गईं और राहुल के बारे में लोग वही बोलने लगे जो वे दिल से सोचते नहीं थे। आपकी चुप्पी में इतना शोर था कि पार्टी में सच बोलने की हिम्मत किसी नेता में नहीं हुई।

दो हजार नौ में जब यूपी-दो सरकार आई तो आपने धीरे-धीरे राहुल गांधी के आगे बड़ी शुरु किया और पार्टी के फैसलों में उन्हें अहमियत मिलने लगी। राहुल गांधी ने अपनी कटीम बनाई जो हाइटेक थी, लैपटॉप और आइपैड से लैस, जनिके हाथों में देश के हर चुनाव क्षेत्र के आंक थे, मतदाताओं का जातगित वविरण था, जो पॉवर प्वाइंट प्रेजेंटेशन से चुनावी रणनीति बनाते थे। राहुल गांधी के अलग दफ्तर होने की वजह से कांग्रेस पार्टी में क अलग सत्ता केंद्र उभरने लगा। उन्होंने दो हजार तीन में शामिल बैठक में हु। पार्टी के फैसले के पलटते हु। गठबंधन की राजनीति के बजाय कांग्रेस के क्ला चलो की नीति पर जोर दिया।

यूपी के दूसरी बार सत्ता में आने के बाद राहुल गांधी ने दो हजार दस में हु। बिहार वधानसभा चुनाव में अकेले ल ने का फैसला किया। पार्टी ने लालू यादव जैसे अपने विश्वसनीय सहयोगी के दरकिनार कर दिया। राहुल की टीम ने बिहार वधानसभा चुनाव के अपनी प्रतिष्ठा से जो ल किया। युवाओं के नेतृत्व देने के नाम पर कांग्रेस के पुराने और आपके वफादार जमीनी नेताओं के दरकिनार कर दिया गया। टिकट बंटवारे से लेकर चुनावी रणनीति तक में राहुल गांधी का दफ्तर यानी आरजी ऑफिस हावी रहा और यहां तक हुआ कि आरजी ऑफिस के फैसलों में कांग्रेस प्रेसिडेंट ऑफिस के शामिल नहीं किया गया। अहमद पटेल और मोतीलाल वोरा जैसे आपके साथ काम करने वाले पुराने पीढ़ी के नेताओं की पूछ घटी तो अन्य बड़े नेताओं ने अपने आपके किनारे कर लिया।

राहुल गांधी के सहयोगियों का तर्क, विश्वास और दावा था कि इससे पार्टी अपने बूते पर बिहार में खड़ी हो पागी। लेकिन चुनाव नतीजों ने इन तर्कों, दावों और विश्वास की हवा नक्किल दी। कांग्रेस के पछिले चुनाव से भी कम सीटें मिलीं। लालू यादव जैसा विश्वस्त और मजबूत सहयोगी खोया सो अलग। लेकिन आप खामोश रहीं।

बिहार विधानसभा चुनाव में करारी हार से भी टीम राहुल ने सबक नहीं लिया और अब वे टीम सोनिया से सीधे-सीधे हो लेने लगे। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव तक तो राहुल गांधी की टीम में झोलाछाप नजीओ टाइप लोगों का बोलबाला हो गया था। बची-खुची कसर दग्विजय सहि और बेनी प्रसाद वर्मा जैसे नेताओं ने पूरी कर दी। राहुल गांधी के ताब तो दौरो और बाबालोग की लैपटॉपी रणनीति ऐसी पेल हुई कि उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के नतीजे भी पार्टी के पछिले प्रदर्शन से खराब रहे।

सोनियाजी, आपने टीम राहुल को इस बात के लिए नहीं रोका कि वे आपके विश्वस्त सहयोगियों के दरकिनार न करें। टीम राहुल को इस बात का मलाल रहता था कि सरकार में उनकी उतनी क्यों नहीं सुनी जाती है जितनी आपकी टीम के लोगों की सुनी जाती है। इनकी इस ललक में उन्होंने मनमोहन सहि सरकार पर दबाव बनाना शुरू कर दिया। कांग्रेस अध्यक्ष के दफ्तर और राहुल गांधी के दफ्तर के बीच की इस रस्साकशी में प्रधानमंत्री बेबस महसूस करने लगे।

नतीजा यह हुआ कि मनमोहन सरकार तटस्थ हो गई। असर कमकाज पर पड़ा। आप खामोश देखती रहीं। इस बीच देश में कसे कब घोटाले हो रहे थे। मीडिया सरकार पर इन घोटालों को लेकर हमलावर हो रहा था, लेकिन सरकार के मंत्री हाथ पर हाथ धर कर बैठे थे। कांग्रेस के नेता पार्टी और सरकार के बचाव में सामने नहीं आ रहे थे। जब अण्णा हजारे के नेतृत्व में भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन अपने उफान पर था तब राहुल गांधी खामोश थे। जब पूरा देश उनकी ओर अपेक्षा भरी नगिहों से देख रहा था तब भी वे खामोश थे। संसद के विशेष सत्र में उन्होंने भाषण अवश्य दिया लेकिन उस अमूर्त वक्तव्य से जनता को कुछ ग्रहण नहीं हो सका। इस बीच आपने अपने स्वास्थ्य के मद्देनजर राहुल गांधी के हाथ में पार्टी की कमान सौंप दी। वे पार्टी के उपाध्यक्ष बने लेकिन वरिष्ठ नेताओं, सरकार और अपनी टीम के बीच सामंजस्य नहीं बना पाए।

देश की राजनीति को बदलने का संकल्प लेकर देश में नकिले राहुल गांधी ने कांग्रेस को भी बदलने की ठानी। उनकी अनुभवहीनता और वरिष्ठ नेताओं की तटस्थता का फायदा नरेंद्र मोदी ने उठाया। दो हजार चार में जब भारतीय जनता पार्टी ने शाइनगि इंडिया का नारा दिया तो कांग्रेस ने आम आदमी के साथ का नया नारा गड़ा। इस बार के चुनाव में कांग्रेस मोदी के नारे का जवाब देती नजर आई। मोदी के 'मैं' के जवाब में कांग्रेस ने 'हम' पर दांव लगाया लेकिन तब तक वह मोदी के व्यूह में फंस चुकी थी। सोनियाजी, आपको राहुल गांधी के प्रति प्रेम भारतीय परंपरा के अनुरूप है लेकिन पुत्र-मोह को लेकर और भी मथिकीय मुहावरे प्रचलित हैं। ध्यान रखा जा।

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- <https://www.facebook.com/Jansatta>

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- <https://twitter.com/Jansatta>